अनुसन्धान प्रवाह Anusandhan Pravah
(An Open Access, Peer Reviewed, Multidiciplinary, Bilingual, E-Journal)
Vol.1, Issue 1, Year 2024, pp. 57-60
URL : https://journal.sskhannagirlsdc.ac.in/

असनी अभिलेख और प्रतिहार शासक

डॉ. ओम प्रकाश लाल श्रीवास्तव
रजिस्ट्रीकरण अधिकारी (से.नि.), पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति, प्रयागराज

सारांश:

उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जनपद में असनी नामक ग्राम से गुर्जर-प्रतिहार शासक महीपाल के विक्रम संवत् 974 के एक प्रस्तर अभिलेख के समीक्षात्मक अध्ययन के आधार पर दोनों प्रतिहार शासकों - महेन्द्रपाल और महीपाल, पिता-पुत्र का नाम एवं क्रम पर प्रकाश डाला गया है।

Article Publication:

Published online on: 30/12/2024

Corresponding Author:

डॉ. ओम प्रकाश लाल श्रीवास्तव
रजिस्ट्रीकरण अधिकारी (से.नि.), पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति, प्रयागराज
Email: oplsrivastava@gmail.com

©Sadanlal Sanwaldas Khanna Mahila Mahavidyalay

Scan For Paper

प्रमुख शब्द-

असनी, प्रतिहार शासक, महेन्द्रपाल, महीपाल

उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जनपद में जिला मुख्यालय से लगभग 15 कि.मी. उत्तर में स्थित असनी नामक ग्राम से गुर्जर -प्रतिहार शासक महीपाल का एक प्रस्तर अभिलेख प्राप्त हुआ है, जो विक्रम संवत् 974 का है। यह तिथि शब्दों और अंकों दोनों में उत्कीर्ण है ''संवत्सर सतेषु नवसु चतुः सप्तत्यधिकेषु माघ मास शुक्ल पक्षस्य सप्तत्यामेवं संवत् 974 माघ वदि।'' इस अभिलेख का प्रतिप्राद्यं विषय भगवान योगस्वामी की पूजा हेतु पुष्प्युक्त सरोवरों के साथ-साथ दिये गये दानादि की चर्चा है। इसमें यह भी उल्लिखित है कि विशेष अवसरों पर राजकुल की ओर से 500 द्रम्म की भी व्यवस्था की गयी थी।

चौदह पंक्तियों में उत्कीर्ण इस अभिलेख का वाचन फ्लीट ने इस प्रकार किया है -[1]

1. ऊँ परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्री
2. महिषपालदेव पादानुध्यात्परम भट्टारक महा
3. राजाधिराज परमेश्वर श्री महीपालदेव पा
4. पादानां महीप्रवर्द्धमान कल्याण-विजय राज्य
5. संवत्सर सतेषु नवसु चतुः सप्तत्यधिकेषु मा
6. घ मास शुक्ल पक्षस्य सप्तत्यामेवं संवत् 974 माघ
7. वदि-योगस्वामिनो पूज्यासंस्कारार्थे श्री विश्व प्र
8. सादः पादाति महावलतसेव सुत योग्गाकेन योग
9. समस्त ब्राह्मण स्थान समस्त प्रव्रजिता एषामलुक
10. य चैत्या लब्ध पुष्पचतुः सर द्वयं दिवसानुदिवस मासा
11. नुमास वर्षानुवर्ष चन्द्रार्का यावत्पालनीया य
12. दिक्षपां भवति तदा-तदा मौलकरा राजकुलस्य द्रम्माः
13. शतानि पंच द्र 500 दातव्यः। लिखितं करणिक
14. सुवर्ण भट्टेन।''

इस अभिलेख में महीपाल के साथ-साथ उसके पिता को भी 'परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर' कहा गया है, जिससे दोनों शासकों की राजनीतिक उपलब्धियों का ज्ञान होता है। महीपाल के सम्बन्ध में संस्कृत के प्रसिद्ध कवि राजशेखर ने

अपने ग्रंथ बालभारत ''प्रचण्ड-पाण्डव'' में स्पष्ट रूप से लिखा है कि उसने मुरलों, मेखलों, कलिंगों, केरलों, कुलूतों, कुन्तलों और रमठों को पराजित किया था।[2]

इस अभिलेख के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण बात यह है कि फ्लीट ने अभिलेख की दूसरी पंक्ति में महीपाल के पिता का नाम 'महिषपाल' पढ़ा है। फ्लीट के 'महिषपाल' पाठ के संदर्भ में उल्लेखनीय है कि इस अभिलेख की नौंवीं पंक्ति में मूर्धन्य 'ष' एक बार 'एषा' और ग्यारहवीं पंक्ति दो बार ''वर्षानुवर्ष'' प्रयुक्त हुआ है, किन्तु उसकी आकृति 'महिषपाल' के पाठ में पढ़े गये मूर्धन्य 'ष' से बिल्कुल भिन्न है, किन्तु फ्लीट ने इसे 'ष' ही मानकर पूरा पाठ 'महिषपाल' किया है।

कीलहार्न[3] ने फ्लीट के 'महिषपाल' पाठ का समर्थन करते हुए 'महिषपाल' को महीपाल के पिता महेन्द्रपाल का अन्य नाम माना है। किन्तु, पुरी4 ने फ्लीट के 'महिषपाल' पाठ को सही मानते हुए भी महीपाल के पिता के स्थान पर उसे महीपाल का अन्य नाम बताया है। जहाँ तक फ्लीट के 'महिषपाल' पाठ की बात है, उन्होंने 'स्याही-छाप' से इस अभिलेख का वाचन किया था, जिसका उन्होंने उल्लेख भी किया है। अतः इस छाप में स्याही फैल जाने के कारण फ्लीट के पाठ में त्रुटि हुई है, जबकि मूल अभिलेख में महीपाल के पिता का नाम स्पष्ट रूप से 'महेन्द्रपाल' उत्कीर्ण है। अतः फ्लीट के त्रुटिपूर्ण 'महिषपाल' पाठ पर आधारित कीलहार्न और पुरी का मत स्वतः खण्डित हो जाता है।5

इस क्रम में पुरी के मत के सन्दर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि मूल अभिलेख का निरीक्षण न करने के कारण पुरी ने फ्लीट के 'महिषपाल' पाठ का समर्थन किया था, जो परिस्थितिजन्य था, किन्तु उसका सम्बन्ध महीपाल के पिता से था, न कि महीपाल से। क्योंकि फ्लीट ने स्पष्ट रूप से 'परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्री महिषपालदेव' के तुरन्त बाद 'पादानुध्यात्परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्री महीपालदेव' पाठ किया है। अतः पुरी द्वारा 'महिषपाल' को महीपाल का अन्य नाम बताया जाना एक

ऐतिहासिक भूल है, जिसका संशोधन आवश्यक है। क्योंकि महीपाल स्वयं अपना 'पादानुध्यात्' नहीं हो सकता। अभिलेख में स्पष्ट रूप से उसे अपने पिता महेन्द्रपालद्ध का 'पादानुध्यात्' बताया गया है।

इस प्रकार असनी अभिलेख से दोनों प्रतिहार शासकों - महेन्द्रपाल और महीपाल, पिता-पुत्र का नाम एवं क्रम प्रमाणित होता है, जिनका उल्लेख राजशेखर ने भी अपने ग्रंथों - बालरामायण6 और बालभारत7 में किया है।

सन्दर्भ:

- फ्लीट, जे. एफ.: असनी इन्स्क्रिप्शन ऑफ महीपाल, इण्डियन एटिक्वेरी, जिल्द 16, जून 1887, पृ. 173-175.
- नमित मुरलमौलिः पाकलो मेकलानां रणकलित कलिंगः केलितट केरलेन्द्रैः।
  अजनिजित कुलूतः कुन्तलानां कुठारः हठहृत रमठश्रीः महीपाल देवः।।
  - -राजशेखरः बालभारत (प्रचण्ड-पाण्डव), 1/7
- कीलहार्न, एफ.: सीयादोनी स्टोन इन्स्क्रिप्शन, इपिग्रैफिया इण्डिका, जिल्द 1, पृ. 171 [Mahendrapala or Nirbhayanarendra or Mahishapala, A.D. 903 and 907; Pupil of the poet Rajashekhar]
- पुरी, बी.एन.: द हिस्ट्री ऑफ द गुर्जर-प्रतिहाराज, ओरियण्टल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 1975, पृ. 93
- श्रीवास्तव, ओम प्रकाश लाल: महीपाल का असनी अभिलेख: पुनर्विवेचन, इतिहास एवं पुरातत्त्व के नवीन आयाम, बी.आर. पब्लिशर्स, दिल्ली 2021, पृ. 81-84.
- आपन्नार्तिहरः पराक्रमधनः सौजन्यवारांनिधिस्त्यागी सत्यसुधा प्रवाह शशभृत्कान्तः कवीनां मतः। वर्ण्यं वा गुणरत्नरोहणगिरेः किं तस्य साक्षादसौ देवो यस्य महेन्द्रपाल नृपतिः शिष्यो रघुग्रामणीः।।
  - बालरामायण, 1/18, बालभारत, 1/11
- बालभारत, 1/7